रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –15 ● कानपुर 1 से 15 अगस्त 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

निरन्तर बढ़ रहे है सफ़लता की तरफ़

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कदम लगातार सरकारी संरक्षण की तरफ बढ़ रहे हैं और जो काम वर्षों में संभावित था वह काम अब कुछ ही महीनों में हो जाना है, इस कार्य के लिए उन सभी लोगों को साधुवाद जिनका विश्वास और श्रद्धा इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ी रही और उसी का परिणाम है कि हमारे साथियों की वर्षों की प्रतीक्षा का समय अब समाप्त होने की कगार पर है यह विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के 39 वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 एम0 एच0 इदरीसी ने व्यक्त किये, डा0 इदरीसी ने कहा कि आज से 39 वर्ष पूर्व जब इस संगठन की स्थापना हुई थी तब यह कल्पना भी नहीं की थी कि आने वाले दिनों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इस संगठन को इतने बड़े दायित्व को निभाने का अवसर प्राप्त होगा, तमाम उतार चढ़ाव के बाद इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को जिन्दा रखा और लगातार राज्य और केन्द्र सरकार पर इस बात का दबाव डाला कि अन्य चिकित्सा पद्धतियों की भाँति इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को भी शासकीय संरक्षण प्राप्त हो जिससे कि इस विधा से जुड़े चिकित्सकों का मनोबल ऊँचा हो और उनके कार्यों का उचित मूल्यांकन हो निःसन्देह यह चिकित्सा पद्धति गुणकारी और लाभकारी है और इस विधा के चिकित्सक अपनी पूरी क्षमता के साथ कार्य भी कर रहे हैं कार्य करते हुए समाज को लाभ भी पहुँचा रहे हैं परन्तु किसी शासकीय मूल्यांकन इकाई के गठित न होने के कारण हमारे चिकित्सकों को उनकी योग्यता का पूर्ण लाभ नहीं मिल पा रहा है।

यद्यपि 21 जून, 2011 को भारत सरकार के स्वास्थ्य मन्त्रालय के एक महत्वपूर्ण आदेश पारित होने से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया को एक स्वतन्त्र नियामक संगठन का स्तर प्राप्त हो गया है। इसी के साथ पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा, चिकित्सा व अनुसंधान के अवसर भी प्रदान किये गये हैं परन्तु अभी भी पूर्ण संरक्षण की आवश्यकता है इस हेतु इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया लगातार भारत सरकार के सम्पर्क में रही। पत्र व्यवहार व व्यक्तिगत सम्पर्क के माध्यम से अपनी बात कही गयी 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने जो पत्र जारी किया वह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए सकारात्मक रूख अपनाये हुए है और हम इस बात के लिए आश्वस्त हैं कि आने वाले कुछ महीनों में ही कुछ महत्वपूर्ण निर्णय होंगे जिसमे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया निर्णायक भूमिका में होगी। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए के महासचिव डा0 अतीक अहमद ने कहा कि वर्षों की प्रतीक्षा समाप्त हो गयी है अब हम सब को सुखद दिनों के आनन्द का अवसर मिलने वाला है, यही वह समय है जब हम सबको अपने निर्णयों पर विशेष ध्यान देना होगा और सिर्फ पैथी हित के लिए ही सोचना होगा डा0 अतीक अहमद ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के गठन और उसकी स्थापना पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि अलग अलग चिकित्सकों को एक सूत्र में बांधने व उनके अधिकारों को दिलाने के उद्देश्य से इस संगठन का गठन किया गया जब यह संगठन अस्तित्व में आया था तब शायद किसी ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि आने वाले दिनों में यही एक मात्र ऐसा संगठन होगा जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दिशा और दशा बदलने में निर्णायक भूमिका का निर्वाहन करेगा, हम आज स्थापना दिवस के अवसर पर अपने उन सभी साथियों को धन्यवाद ज्ञापित करना नहीं भूलेंगे जिनका सहयोग और समर्थन हमें प्राप्त होता रहा है और अपने चिकित्सक साथियों का भी धन्यवाद जो हर स्थिति में हमसे जुड़े रहे यह सब आपके प्यार का परिणाम है जो एक संगठन के रूप में आपके सामने है, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आने वाला समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी का ही है डा0 अतीक ने कहा कि अब वह समय आने वाला है जब हम सबको अपने अपने दायित्वों का पालन ईमानदारी के साथ करना होगा।

कार्यक्रम को विचार देते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के संगठन मंत्री डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि संगठन का काम सबसे कठिन होता है हर एक के विचारों से तालमेल बैठालना बहुत मुश्किल होता है परन्तु आप सबके सहयोग से मैं अपने आपको धन्य मानता हूँ कि इतने विशाल संगठन में कहीं मतभेद नहीं है और यही एकजुटता हमें कार्य करने के लिए प्रेरणा देती है मैं आभारी हूँ अपने संगठन के अध्यक्ष जी का जिन्होंने हमपर भरोसा किया और इतना महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा आज हमें प्रसन्नता है कि इस 39 वें स्थापना दिवस के अवसर पर हम कह सकते हैं कि आने वाला समय इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति का है, जिस गति से सरकारी कार्यवाही चल रही है वह इस बात का संकेत दे रही है कि प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त हो चुकी हैं और एक सुखद स्थिति की तरफ हम बढ़ रहे हैं। संगठन की कोषाध्यक्षा श्रीमती शहीना इदरीसी ने कहा कि कोष को सम्भालने में मुझे उतनी खुशी नहीं हुई जितनी आज हो रही है कि आने वाले समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सफलता मिलने वाली है और इस सफलता का श्रेय इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया का है, इस सफलता की जो पूंजी है वह सारे कोषों से बहुत ऊपर है, मैं उन सब साथियों को बधाई देना चाहती हूँ जिनके स्नेह से आज हम इस स्थिति तक पहुँचे।

स्थापना दिवस के इस अवसर पर मै डा0 इदरीस खान साहब (केन्द्रीय सचिव) को ध्यानवाद देना नहीं भूलूंगी जिनके अन्दर अस्वस्थता और आयु के प्रभाव के बावजूद भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति प्रेम कम नहीं हो रहा है, मैं डा0 इदरीसी से भी निवेदन करना चाहूंगी कि वह आन्दोलन को और गति प्रदान करें क्योंकि सारा भारत आपकी तरफ देख रहा है। इसी क्रम में कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के राष्ट्रीय महासचिव डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी ने स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि जब लक्ष्य करीब आता दिख रहा हो तब उस समय हर कदम बहुत समझबुझ कर उठाना होता है, यह सौभाग्य है कि मतभिन्नता होने के उपरान्त भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के शासकीय संरक्षण के मामले पर पूरे राष्ट्र में मतैक्यता दिखायी पड़ रही है और यही इलेक्ट्रो होम्योपैथी की विजय का मूल आधार है 29 राज्यों और 7 केन्द्र शासित प्रदेशों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की एक ही आवाज आ रही है और वह आवाज़ है कि हम एक हैं।

आज के दिन की आप सबको बधाई इस अपेक्षा के साथ कि आने वाला समय हम सबके लिए आनन्द दायक है।

- ✓ सफ़लता के मिल रहे संकेत
- ✓ वर्षों नहीं महीनों का समय
- ✓ भविष्य के प्रति सचेत
- ✓ हर कदम सोच समझ कर
- ✓ चिकित्सकों का हित सर्वोपरि
- ✓ कल्पना नहीं संकल्प

बनने लगी है सहमति

28 फरवरी, 2017 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मैकेनिज़्म के लिए जारी पत्र में वांछित जानकारियों के अनुपालन में हमारे 7 साथियों द्वारा प्रेषित प्रतिवेदनों के अस्वीकार होने के उपरान्त उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ने गम्भीरता से विचार किया और सर्वसहमति का आवाहन किया एसोसिएशन के इस आवाहन का प्रभाव भी पड़ा और कुछ लोगों ने इस तरफ कदम भी बढ़ाये हैं।

गत दिनों इसी परिपेक्ष्य में डा0 वी0 कुमार से डा0 मो0 हाशिम इदरीसी व डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी से लम्बी चर्चा हुई इसी बीच झारखण्ड और उड़ीसा के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के संस्था संचालकों ने भी सहमति पर स्वीकृति दी है।

1–2 और 3 अगस्त को देश के कुछ शीर्ष संस्था प्रमुखों से भी सकारात्मक मीटिंग प्रस्तावित हैं।

अमर्यादित सम्वाद

संवादों से बड़े से बड़े काम बन जाते हैं और यह संवाद ही होता है जो बनते हुए कामों को बिगाड़ देते हैं संवाद का समाज में अपना एक अलग स्थान है ज्यों–ज्यों तकनीकें बढ़ती जा रही हैं संवादों का स्वरूप भी बदलता जा रहा है।

पहले विचारों का आदान प्रदान एक दूसरे के सम्मुख होता था परन्तु आज जो संवादों का स्वरूप है वह प्रत्यक्ष न होकर छाया के रूप में, भावनाओं के रूप में प्रकट होता है और यही प्रकट हुई भावनायें मनुष्य की अन्तः भावना को प्रदर्शित करता है, संवाद किसी भी तरह का हो परन्तु यदि उसमें मर्यादा का आवरण होता है तो वह संवाद सुनने में अच्छे लगते हैं परन्तु जब से व्यक्ति अपनी भावनाओं का प्रकटीकरण सोशल मीडिया के माध्यम से प्रकट करने लगा है तब से भावनायें तो आती हैं परन्तु उन भावनाओं में मर्यादाओं के लिए कोई स्थान नहीं होता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथ भी इसी समाज में रहता है इसलिए वह भी यही आचरण करने लगा है कभी कभी हमारे साथियों के आचरण इतने बचकाने होते हैं कि वह अपनी आयु व पद की गरिमा को भी भूल जाते हैं।

इलेक्ट्रो होम्योपैथ चिकित्सक के रूप में समाज में पहचाने जाते हैं और तमाम परिवर्तनों के उपरान्त भी अभी भी समाज में चिकित्सक एक सम्मानजनक दृष्टि से देखा जाता है और उससे अपेक्षा भी की जाती है कि उसकी भाषा शैली शुद्ध और सौम्य होगी परन्तु परिवर्तन की बयार यहां भी है, हम जब सोशल मीडिया के अंग फेसबुक और वाह्सएप देखते हैं तो तमाम ऐसे उदाहरण सामने आते हैं जिनको पढ़कर मन विचलित होने लगता है। गत दिनों इलेक्ट्रो होम्योपैथी के एक शीर्ष व्यक्तित्व ने फेसबुक पर कुछ लिखकर डाला उनसे ही सम्बन्धित किसी बुजुर्ग व्यक्ति ने जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए काफी समर्थित हैं लिखा कि सब एक मत होकर और एक राय बनाकर कार्य करें उनके इस भाव को उन्हीं के क्षेत्र के आस पास रहने वाले (अब राज्य अलग हो गया है) ने इतना सुन्दर जवाब दिया कि मर्यादाओं के तार तार हो गये हैं, यह निर्विवाद सत्य है कि हर व्यक्ति का स्वभाव अलग होता है, उसके बात करने का ढंग अलग होता है, परन्तु जब बात किसी सार्वजनिक मंच के माध्यम से कही जाती है तो यह ध्यान रखना पड़ता है कि विचार तो निजी होते हैं परन्तु यह विचार समाज में फैलते हैं।

आज जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी में एक दूसरे से सम्पर्क और सम्बन्ध बनाने की बात हो रही है ऐसे में किसी के लिए भी आक्रामक भाषा का प्रयोग करना अभद्रता की श्रेणी में आता है, चिकित्सक भद्र पुरूष के रूप में परिभाषित होता है अस्तु उसके द्वारा कभी भी अभद्रता की अपेक्षा नहीं की जा सकती है, संवेगों का उतार चढ़ाव तो चलता रहता है परन्तु विचारों की अभिव्यक्ति पर हमारा नियन्त्रण होना बहुत आवश्यक है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की लड़ाई अभी बहुत लम्बी है हर व्यक्ति के विचार आयेंगे और यह आवश्यक नहीं है कि एक दूसरे के विचारों में समानता या सहमति बने परन्तु संवाद एक ऐसा माध्यम होता है जो सबको एक मंच पर लाने का काम करता है तथा विचारों में एक रूपता भले ही न आवे परन्तु उस दिशा में प्रयास तो किये ही जा सकते हैं, प्रयास इस लिए भी किये जाने चाहिये क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी न तो किसी की सम्पत्ति है और न ही इस पर किसी का एकाधिकार , यह एक चिकित्सा पद्धति है जिसपर जितना अधिकार एक शीर्ष संस्था संचालक का है उतना ही अधिकार एक सामान्य चिकित्सक का भी है कारण जब व्यवस्थायें बनेगी तो जो अवसर उपलब्ध होंगे उन अवसरों का लाभ सबको प्राप्त होगा सबको प्राप्त होने का तात्पर्य अवसरों का लाभ उठाने के लिए जो आवश्यक और वांछित अर्हतायें हैं जो उनको पूरा करेगा वही लाभ उठा पायेगा। इसलिए न तो व्यक्तिगत अहं आड़े आना चाहिये, न ही ऐसे विचार आगे आने चाहिये कि जो करूँगा मैं ही करूँगा सकारात्मक विचारों के साथ आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

यही आज की ज़रूरत है, व्यक्तिगत महत्वाकक्षांओं से उठकर ही जो व्यक्ति संस्था या संगठन कार्य करेगा वही दूरगामी परिणामों का लाभ उठा पायेगा, भ्रान्तियों को जन्म न दें मर्यादायें सदैव से फलीभूति आयी हैं और आगे भी होंगी।

अपेक्षाओं और सम्भावनाओं दोनों का ही शमन होगा यह सब इलेक्ट्रो होम्योपैथों को विश्वास होना चाहिये।

शर्तों पर नहीं चलती ज़िन्दगी

जो व्यक्ति जिस कार्य से लगा होता है वह उसे ही अपनी जिन्दगी समझ लेता है और जिन्दगी जीने की अपनी एक कला होती है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जितने भी लोग लगे हैं वह सबके सब इलेक्ट्रो होम्योपैथी की ही जिन्दगी जीते हैं और वह चाहते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वह स्थान प्राप्त हो जहां से उनकी जिन्दगी एक महत्वपूर्ण जिन्दगी बन जाये इस महत्ता को पाने के लिए देश का हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ जी जान से लगा है, एक सामान्य चिकित्सक से लेकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के शीर्ष संस्था संचालक सब के सब अपने अपने स्तर से इस कार्य में लगे हैं। वैसे तो इस आन्दोलन का इतिहास वर्षों पुराना है और हम सभी लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इस आन्दोलन से भली भाँति परिचित हैं जो नवोदित हैं उन्हें भी अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में काफी कुछ ज्ञान प्राप्त हो गया है, आज से तीस चालीस साल पहले सूचना का माध्यम बहुत धीमा हुआ करता था सूचनायें एक दूसरे के पास या तो एक दूसरे के सम्पर्क से या फिर समाचार पत्रों के माध्यम से पहुँच पाती थीं, कभी कभी तो महीनों और वर्षों बीत जाते थे सूचनायें पहुँचती ही नहीं थी।

समय का परिवर्तन हुआ सूचना जगत में क्रांन्तिकारी परिवर्तन हुए मोबाइल फैक्स व अन्य तरह तरह के संचार माध्यमों से सूचनायें एक दूसरे के पास पहुँचने लगीं इन्ही सूचनाओं का परिणाम है जो आज चेतना हम सब में दिखायी पड़ रही है। सन् 2010 के बाद से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में बहुत परिवर्तन हुआ है, 2011 का भारत सरकार का पत्र जारी होते ही यह तय हो गया था कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कानून अवश्य बनायेगी और कानून बनाकर इस चिकित्सा पद्धति का विनियमतीकरण हो जायेगा इसी विनयमितीकण की दिशा में भारत सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है, यह कदम है पूरे देश में जितने भी लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हैं चाहे वह इकाई के स्तर पर हो या फिर समूह के स्तर पर वह सरकार को वह सारी की सारी सूचनायें दें जिससे कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कोई निर्णय ले सके। 28 फरवरी 2017 को भारत सरकार द्वारा जारी जिन 8 बिन्दुओं की सूचना चाही गयी है वह एक प्रतिवेदन के माध्यम से भारत सरकार को प्रस्तुत करना है जैसाकि आप सबको ज्ञात है कि सरकार ने इस जानकारी के लिए क्रमशः 3–3 माह के अन्तराल में जानकारी प्रस्तुत करने का अवसर दिया है। प्रथम आवृत्ति में देश की 7 इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सस्थानों द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में अपना पक्ष प्रस्तुत किया सरकार ने इन सारे प्रतिवेदनों को वापस कर दिया और 13 जून, 2017 को एक नया पत्र जारी करते हुए यह निर्देश दिया कि भविष्य में जो प्रतिवेदन भेजे जायें उन प्रतिवेदनों में उतनी ही जानकारियां दी जायें जो सरकार द्वारा मांगी गयी है ! किसी साक्ष्य या अभिलेखों की अवश्यकता नहीं है ! साथ ही साथ यह भी कहा कि समुचित और आवश्यक जानकारियां ही प्रस्तुत की जायें सरकार से यह निर्देश प्राप्त होने के उपरान्त भी हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कर्ता–धर्ताओं के कान में जूँ तक नहीं रेंगी, कोई किसी की बात सुनने को तैयार नहीं है।

दूसरे शब्दों में कहा जाये तो हर व्यक्ति ने इसे अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया है जबकि प्रतिवेदन भेजना व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का विषय है ही नहीं, शुद्ध और अच्छा प्रतिवेदन इलेक्ट्रो होम्योपैथी की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा सकता है, प्राप्त जानकारी के आधार पर जुलाई के महीने में एक प्रतिवेदन और सरकार को भेजा गया है इस प्रतिवेदन का प्रचार फेसबुक और वाह्सएप के माध्यम से खूब किया जा रहा है, लोगों को यह बताया जा रहा है कि हमारा ही प्रतिवेदन स्वीकार किया गया है, जितना भी सम्भव हो रहा है मनगढ़न्त बातें बतायी जा रही हैं, कोई कुछ भी कहे यह उचित नहीं है यदि मामला व्यक्तिगत हो तो उस सन्दर्भ में आप कुछ भी कह सकते हैं परन्तु जब बिषय लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथों का हो तो वहाँ पर जवाबदेह बनना ही पड़ता है। पूर्व में प्रेषित 7 प्रतिवेदनों का हश्र देखकर आज का इलेक्ट्रो होम्योपैथ अति चौकन्ना है वह जानना चाहता है कि जो कुछ भी सरकार को दिया जा रहा है वह सार्वजनिक हो ! लेकिन हमारे साथी जो कुछ भी देते हैं वह बताना नहीं चाहते हैं जिसका परिणाम कभी भी अच्छा नहीं होता, इसी पारदर्शिता के अभाव नें इलेक्ट्रो होम्योपैथों के मध्य अविश्वास की भावना को जन्म दिया है और धीरे–धीरे यह अविश्वास चरम पर पहुँचता जा रहा है यह कोई अच्छे लक्षण नहीं हैं जिन महाशय ने जुलाई के माह में भारत सरकार को प्रतिवेदन प्रस्तुत किया कुछ जागरूक इलेक्ट्रो होम्योपैथों ने यह जानकारी चाही कि आपने जो प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है उसका स्वरूप क्या है ? उन्हें भी बताया जाये ! जैसे ही बात सार्वजनिक करने की हुई प्रतिवेदन प्रस्तुत करने वाले सज्जन की भावभूमिमा बदल गयी और उन्होंने दो टूक शब्दों में कह दिया कि हम प्रतिवेदन उसी शर्त पर दिखायेंगे जब हमें आश्वस्त कर दिया जाये कि भविष्य में उनके द्वारा कोई प्रतिवेदन नहीं दिया जायेगा इस तरह की शर्तें इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कहाँ ले जायेंगी ?यह तो वही जान सकता है जो शर्तों के आधार पर जिन्दगी जीने का काम करता है।

आज का युग बहुत पारदर्शी हो चुका है देश में सूचना कानून प्रचलित है, कोई भी चीज़ गोपनीय नहीं रह सकती जिन्हें जानने की उत्सुकता होगी वह सूचना के अधिकार के माध्यम से सारी जानकारियां मंगा लेंगे इसलिए सार्वजनिक जीवन में जो कुछ भी कहा जाये उसे बहुत सोच समझ कर कहना चाहिये। इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला होकर रहेगा किसी के कुछ भी करने से कुछ बिगड़ता नहीं है, संसार में विष और अमृत नाम के दो शब्द हैं जिसक विचारधारा सकारात्मक है उसके लिए विष भी अमृत हो जाता है और जिसकी विचारधारा में स्वार्थ और नाकारात्मकता का वास होता है उनके लिए अमृत भी विष हो जाता है। लाखों लोगों का भविष्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ा है और यह लाखों लोग वर्षों से इस प्रतीक्षा में हैं कि अब तो इस चिकित्सा पद्धति के लिए कोई निर्णायक आदेश आये! लाखों की भावनायें कभी आहत नहीं होती हैं और शुद्ध मन से किया गया प्रयास कभी भी निरर्थक नहीं होता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन आज अपने अन्तिम चरण में है या यह कहा जाये कि निर्णायक अवस्था में है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी शैनेः शैनेः हम प्रगति की राह पर बढ़ रहे हैं और आने वाले समय में भारत सरकार की सकारात्मक सोच इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए वरदान साबित होगी।

वर्षों की आस पूरी होगी, इन्तेज़ार का समय ऐसा प्रतीत हो रहा है कि समाप्ति की बेला पर है जैसे ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विनियमितीकरण हुआ देश का हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ अपनी शर्तों पर जीयेगा।

क्योंकि हम झूठ नहीं बोलते

"कुछ वर्षों पहले हिन्दी सिनेमा में एक फिल्म आयी थी उसका शीर्षक था क्योंकि मैं झूठ नहीं बोलता" लेकिन जब फिल्म देखी गयी तो फिल्म का नायक झूठ बोलते हुए भी ऐसा प्रदर्शित करता है कि वह झूठ नहीं बोल रहा है वह कल्पना की गढ़ी हुई एक कहानी थी और उसका उद्देश्य मात्र मनोरंजन करते हुए हल्का फुल्का संदेश देना था परन्तु यर्थाथ के जीवन में मात्र मनोरंजन से काम नहीं चलता अपितु वास्तविकता को पहचानते हुए सत्य के धरातल पर उतरना पड़ता है और वही उसकी कसौटी होती है। यहाँ पर हमने यह सन्दर्भ इस लिए लिया क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलनकर्ता जो कुछ भी करते हैं वह सत्य तो होता है लेकिन जो प्रस्तुति होती है वह सत्य से परे है, जिसका परिणाम यह हो रहा है कि ऐसे लोगों की छवि तो खराब है ही साथ में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की छवि खराब कर रहे हैं। एक या दो मौके नहीं ऐसा कोई कार्य इन लोगों के द्वारा किया ही नहीं जाता है जहां से झूठ की सुगन्ध न आ रही हो।

17 जुलाई, 2017 को जब पूरे देश के सांसद और विधायक राष्ट्रपति के चुनाव में व्यस्त थे और मतदान कर रहे थे दोनों सदनों में न तो लोकसभा में और न ही राज्यसभा में कोई संसदीय कार्य सम्पादित हुआ था लेकिन हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथियों ने इसी 17 जुलाई के दिन सदन में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित बिल पास करा दिया यह कितना सम्भव है ?यह आप सब स्वयं निर्णय लें हम कुछ नहीं लिखेंगे क्योंकि वे झूठ नहीं बोलते, इलेक्ट्रो होम्योपैथी का मामला इतना गम्भीर नहीं है जितना कि हमारे साथियों द्वारा बनाकर प्रस्तुत किया जा रहा है इनकी इसी प्रस्तुतीकरण का परिणाम है कि सरकार में बैठे अधिकारी निरन्तर आपकी गतिविधि का अध्ययन कर रहे हैं और सब कुछ सत्य होने के बाद भी उसे स्वीकारने में आनाकानी कर रहे हैं।

28 फरवरी, 2017 और 13 जून, 2017 को जो कुछ भी आया और आगे जो कुछ भी आयेगा वह सब हमारे किये हुए कर्मों का परिणाम होगा एक दो व्यक्ति की बात क्या करें पूरा देश ही इस विषाणु से ग्रसित है और इसका कुप्रभाव कैंसर जैसी घातक बीमारी से भी ज़्यादा खतरनाक है, एक दो उदाहरणों की कौन बात करे इस तरह के उदाहरणों की एक श्रंखला है। एक बानगी और देखिए झारखण्ड और उड़ीसा राज्यों के इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रतिनिधि संस्था संचालक दवा निर्माता व बुजुर्ग इलेक्ट्रो होम्योपैथ जब टेलीफोन पर यह जानकारी लेना चाहता है कि कानपुर नगर से कितने लोगों ने प्रपोज़ल भेजा है ?कितनी हास्यप्रद बात है, लोग प्रपोज़ल भेजते हैं कोई एक दूसरे को बताता नहीं है, जानकारी तो तब होती है जब सरकार द्वारा उन प्रपोज़लों का निस्तारण किया जाता है जो 7 प्रपोज़ल हमारे साथियों द्वारा भारत सरकार को भेजे गये उनकी जानकारी हम सबको तभी हुई जब सरकार ने उनको वापस कर दिया, इसी तरह जून से सितम्बर के खण्ड में किन किन लोगों ने प्रतिवेदन भेजे ! उनकी जानकारी तभी होगी जब सरकार उनपर भी कोई निर्णय लेगी, दावा कोई कुछ भी करे, कुछ लोग तो दावा कर रहे हैं कि मेरे द्वारा दिया गया प्रतिवेदन स्वीकार हो गया है और शीघ्र ही उसपर विचार करके सरकार उन्हें ही मान्यता देगी अब इस बात में कितनी दम है ?यह जानने के लिए हम सबको इन्तेज़ार करना होगा हम तो यही मानते हैं कि हमारा कोई साथी गलत बात नहीं करता और न ही गलत जानकारी देता है, प्रतिवेदनों के साथ सरकार क्या रवैया अपना रही है ?यह तो सरकार ही जाने !

मार्च के महीने में बंगाल से एक प्रतिवेदन भारत सरकार को प्रस्तुत किया गया वह प्रतिवेदन भी बाकी 6 प्रतिवेदनों के साथ वापस कर दिया गया अब हमारे बंगाल के साथी कह रहे हैं कि हमने प्रतिवेदन भेजा ही नहीं, तो वापस कैसे हुआ ?मैंने तो एक आवेदन दिया था, अब यह तो देने वाला ही जाने कि उनकी नज़र में आवेदन क्या होता है और प्रतिवेदन क्या होता है ?वर्तमान परिस्थितियों में भारत सरकार के पास जो भी प्रपत्र भेजे जायेंगे वह प्रतिवेदन के स्वरूप में ही स्वीकारे जायेंगे, इसी तरह बंगाल का एक प्रकरण और है लोग एक दूसरे पर संदेह भी करने लगे हैं पुराने दो साथी आपस में एक दूसरे पर संदेह इस लिए करते हैं क्योंकि एक साथी किसी मान्यता प्राप्त पद्धति की काउन्सिल से जुड़ गया है अब यह समझदारी की बात है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विषय सबसे अलग है। कोई भी परिषद इलेक्ट्रो होम्योपैथी को प्रभावित नहीं कर सकती क्योंकि अभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी परीक्षण की बेला से गुज़र रही है और जो परीक्षा हो रही है वह कोई कठिन नहीं है परन्तु जिनको दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों को हल करने की आदत है वह लघु उत्तरीय प्रश्न का उत्तर देना उचित नहीं समझते ! जबकि सत्य तो यह है कि लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर में पूरे अंक प्राप्त होने की सम्भावना रहती है, जबकि दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर में अंको का आवंटन परीक्षक के विवेक पर निर्भर करता है, परीक्षक 10 अंक के प्रश्न में एक या दो अंक भी दे सकता है।

अच्छा तो यह होता है कि सभी प्रश्नों का उत्तर दिया जाये और जो प्रश्न हमें कठिन लग रहे हैं उसपर मौन रहना ही उचित है लेकिन भारत सरकार ने जो प्रश्नावली हम सब के सामने प्रस्तुत की है उसमें कुछ भी अनुउत्तरित नहीं है यह तो परीक्षार्थी पर निर्भर करता है कि वह अपने विवेक का प्रयोग किस स्तर तक करता है 28 फरवरी, 2017 से इलेक्ट्रो होम्योपैथी में एक क्रांन्तिकारी परिवर्तन आ चुका है हर सदस्य जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ा है वह भारत सरकार के पत्र पर चर्चा करता नज़र आ रहा है जो लोग समूह या खेमे में बंटे हैं वह अपने अपने प्रमुख पर पूरी आस्था जता रहे हैं और अपेक्षा कर रहे हैं कि उनके प्रमुख जो कुछ भी करेंगे वही लाभकारी होगा। हमारी कामना है कि हमारे साथी अपने उद्देश्य में सफल हों परन्तु कामना के साथ–साथ एक दूसरा पहलू भी है कि यदि मात्र कामना करने से काम सिद्ध हो जाते हैं तो दूनिया में कोई काम नहीं करता, एक वाक्य है सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः इसमें कामना की गयी है कि सभी लोग सुखी हों और सभी लोग निरोगी हों, कामना तो अच्छी है परन्तु इस कामना की पूर्ति के लिए व्यवसाय और ऐसी व्यवस्थाओं का निर्माण करना होता है जो लोगों को सुखी बना सके, शरीर है तो व्याधियां भी आयेंगी, व्याधियों से मुक्ति के लिए चिकित्सकों और चिकित्सालयों की आवश्यकता होती है ठीक इसी तरह से वादे और दावे तभी सफल होते हैं जब उनपर काम किया जाये भारत सरकार ने यदि 8 बिन्दुओं पर जानकारी चाही है तो 8 बिन्दुओं पर ही जानकारी देनी होगी, पृष्ठों की संख्या बढ़ा देने से 4 बिन्दुओं पर जानकारी देकर सफलता की अपेक्षा करना अपने आप को धोखा देना है। स्वयं व्यक्तिगत धोखा खाओ तो कोई बात नहीं लेकिन जब आपके कार्य से एक बहुत बड़ा समूह प्रभावित हो रहा हो तो ऐसा धोखा कभी भी समाज द्वारा स्वीकार नहीं हो।

परिस्थितियां प्रतिपल बदल रही हैं, जो आज है वह कल रहेगा यह आवश्यक नहीं है 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार द्वारा जारी पत्र का भाव 13 जून, 2017 के पत्र में बदल गया बहुत कम लोगों ने ध्यान दिया होगा, 28 फरवरी का मैकेनिज़्म 13 जून को इक्ज़ामिनेशन में बदल गया अभी 31 दिसम्बर के 6 माह शेष हैं, क्या क्या परिवर्तन होता है ?सब कुछ देखना है।

एक महत्वपूर्ण विषय और है सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ बहुत चतुराई बरत रही है पत्र के शीर्षक में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सिस्टम ऑफ मेडिसिन के नाम से पुकारा और अन्दर के भाव में उसे थेरेपी बना दिया, यह मानवीय भूल नही है यह सरकार की रणनीति का एक हिस्सा है हमें ऐसे हर परिवर्तनों पर पैनी दृष्टि से ध्यान देना होगा, क्योंकि एक ज़रा सी चूक हीरो से ज़ीरो बनाने में कसर नहीं छोड़ती इन सब बातों पर जब गम्भीरता से विचार किया जाता है तो यही बात सामने आती है जो कुछ वास्तविक है वही बताओ। वही प्रसारित करो अगर वैज्ञानिकता की आवश्यकता नहीं है तो उसपर अपना दृष्टिकोण नहीं देना चाहिये हमारा मानना है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में बहुत सारे विद्वान और वैज्ञानिक हैं। उपयुक्त अवसर आने पर इनकी भी प्रतिभा का उपयोग होगा परन्तु प्रथम प्रयास तो यही हो कि अवसर का लाभ उठाते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित होने का जो शुभ समय आया है उसमें कोई अड़चन न पैदा हो, 6 महीने का समय बीत चुका है, अब 6 माह से कम का समय शेष है हमें यह प्रयास करना चाहिये कि इसी अवधि में सरकार कुछ न कुछ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए सकारात्मक निर्णय ले ले। निर्णय सकारात्मक ही होंगे ऐसा विश्वास रखना चाहिये परन्तु धूप के बाद छाया का सिद्धान्त भी नहीं भूलना चाहिये यदि छाया वाली व्यवस्था होती है तो उस स्थिति से हमें ही निपटना होगा। परिस्थितियों के बनने और बिगड़ने से व्यवस्थायें बदल जाती हैं इसलिए हम सब को यह प्रयास करते रहना चाहिये कि परिस्थितियां प्रतिकूल न होने पायें। पूरे देश में अभी तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथियों के अन्दर एक गज़ब का उत्साह है किसी भी चिकित्सक या किसी छोटे से छोटे इलेक्ट्रो

होम्योपैथ से बात कर लें वर्तमान परिस्थितियों में वह उत्साह से लबरेज़ है उसका आत्म विश्वास इतना बढ़ा हुआ है कि वह मान चुका है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता मिल कर ही रहेगी यह यदि एक तरफ अच्छी बात है तो दूसरी तरफ अति उत्साह भी कार्य को प्रभावित करता है। जो भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के ज़िम्मेदार व्यक्ति हैं यह उनका दायित्व है कि समाज में उसी तरह के समाचार प्रसारित्त करें जिनकी विश्वसनीयता किसी भी सूरत में कम न हो इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक जंग है और कहा जाता है कि जंग में सब जायज़ है परन्तु जायज़ की आड़ में नाजायज़ नहीं होना चाहिये हमारे वक्तव्यों में इतना संतुलन हो कि वह कभी भी मिथ्या की श्रेणी में न आवें। शनैः शनैः समय व्यतीत होता जा रहा है फरवरी से अगस्त आ गया जो कुछ भी परिवर्तन हुआ है उसे स्वीकार करते हुए आगे की रणनीति तय करनी है अगस्त से दिसम्बर भी आयेगा। प्रतीक्षा की घड़ियां भी समाप्त होंगी और आप सब को मधुर संदेश भी मिलेगा ऐसी अपेक्षा है क्योंकि हमारा मानना है कि हममे से कोई भी झूठ नहीं बोलता है जीवन में बहुत सारे पल कब आये और कब चले गये इसका पता ही नहीं लगता परन्तु प्रतीक्षा की घड़ियां ऐसी घड़ियां होती हैं जो काटे नही कटती हैं।

आज वही स्थिति हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथियों की है।

स्तरीय शिक्षण व्यवस्था को तैयार है इलेक्ट्रो होम्योपैथिक विद्यालय

समाज को उच्च स्तरीय इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों के द्वारा चिकित्सा सुविधा प्राप्त हो इसके लिए आवश्यक है कि उसी स्तर के चिकित्सक तैयार हों इस विचार को मूर्त रूप देने के लिए बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने 24 अप्रैल, 2017 को एक नया कोर्स जी0 ई0 एच0 एस0 लांच किया है और इस कोर्स के अनुरूप ही विद्यालयों की व्यवस्था में परिवर्तन भी किये थे।

आपको बताना उचित होगा कि वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का प्रकरण भारत सरकार के संज्ञान में है और उसपर युद्ध स्तर पर कार्य भी चल रहा है और उम्मीद है कि आने वाले कुछ ही महीनों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विनियमिती–करण हो जायेगा और हम सब पूरी अपेक्षा भी कर सकते हैं कि विनियमितीकरण के बाद प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कोर्सों के संचालन का अधिकार बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के पास ही रहेगा, इसका कारण यह है कि निजी क्षेत्र में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षण व्यवस्था के लिए प्रदेश सरकार द्वारा स्थापित नियमों और मानकों का पालन मात्र बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ही करता है इसके साथ–साथ मान्यता प्राप्त पद्धतियों में संचालित पाठ्यक्रमों के समान अवधि वाले पाठ्यक्रम का संचालन बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0. द्वारा ही किया जा रहा है जी0 ई0 एच0 एस0 कोर्स का प्रारम्भ इसी कड़ी में प्रारम्भ हुआ है, हर विद्यालय के साथ ओ0पी0डी0 होनी आवश्यक है इसके निर्देश बोर्ड द्वारा सभी विद्यालयों को पहले ही निर्गत किये जा चुके हैं सितम्बर के माह में बोर्ड द्वारा विद्यालयों का औचक निरीक्षण कर मानकों का पालन सुनिश्चित किया जायेगा और जिन विद्यालयों ने अगस्त के अन्तिम सप्ताह तक व्यवस्थायें दुरुस्त नहीं कीं उन्हें सुधरने का एक अवसर अवश्य दिया जायेगा क्योंकि दिसम्बर 2017 के बाद भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कुछ न कुछ सकारात्मक निर्णय आना सम्भव है इसी परिपेक्ष में विद्यालयों को भी अपने मानकों में सुधार करना होगा जी0 ई0 एच0 एस0 कोर्स में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं कोर्स की गुणवत्ता को देखते हुए प्राप्त जानकारियों के अनुसार इस कोर्स में प्रवेशार्थियों द्वारा रूचि दिखायी जा रही है वर्तमान में यह कोर्स बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा सम्बद्ध व मान्यता प्राप्त सभी विद्यालयों में संचालित हो रहा है।

इहमाई के स्थापना दिवस के अवसर पर इहमाई के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 एम0 एच0 इदरीसी महात्मा डा0 काउण्ट सीज़र मैटी के चित्र पर माल्यार्पण करते हुये। –छाया गज़ट

इहमाई के 39 वें स्थापना दिवस के अवसर पर डा0 एस0 पी0 श्रीवास्तव महात्मा डा0 काउण्ट सीज़र मैटी के चित्र पर माल्यार्पण करते हुये। –छाया गज़ट

यह कोर्स उत्तर प्रदेश के चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित निर्देशों के अनुरूप ही बनाया गया है कुछ नये विषय जोड़े गये हैं 4 वर्षीय नियमित पाठ्यक्रम के बाद 5 वें वर्ष में क्रियात्मक अध्ययन होगा, बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 इस बारे में प्रयासशील है कि यह क्रियात्मक अध्ययन किसी जिलास्तरीय चिकित्सालय या फिर पी0 एच0 सी0 या सी0 एच0 सी में पूर्ण कराया जाये, यह आज की योजना है यदि सरकार द्वारा कोई अन्य दिशा निर्देश जारी किये जाते हैं तो उनके अनुरूप ही कार्यवाही की जायेगी।

इस वर्ष बोर्ड द्वारा अपने सभी विद्यालयों व स्टडी सेन्टरों को स्पष्ट निर्देश दिये गये हैं कि शिक्षण व्यवस्था में किसी तरह की शिथिलता न बरती जाये तथा योग्य से योग्यतम विषय विशेषज्ञों द्वारा विषयों का पाठन करवाया जाये, कारण आने वाले समय में जब चिकित्सकों के मध्य व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा होगी तो योग्यता ही काम आयेगी, बदले हुए परिवेश में यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को टिकना है तो उन्हें खुद को प्रतिस्पर्धी के तौर पर स्थापित करना होगा, मात्र अधिकार मिलने से ही काम नहीं चलता है अधिकारों का सही लाभ वही उठा पाता है जो अपने कर्तव्यों और दायित्वों के प्रति जागरूक होता है, एक अच्छे चिकित्सक के निर्माण के लिए विद्यालय ही प्राथमिक इकाई होती है जहां से चिकित्सक तैयार होते हैं इसलिए यह विद्यालयों का दायित्व है कि वह अच्छे से अच्छे विषय विशेषज्ञों के माध्यम से छात्रों को विषय का ज्ञान दें जिससे कि भविष्य में यह छात्र योग्य चिकित्सक बन कर समाज की सेवा कर सके।

शास्त्रीय ज्ञान के साथ साथ चिकित्सकीय ज्ञान का होना अति आवश्यक है अस्तु बोर्ड इस बात पर विशेष बल दे रहा है कि तीसरे वर्ष से ही छात्र को विद्यालय द्वारा संचालित डिस्पेंसरी/ चिकित्सालय में नियमित रूप से बैठाला जाये जहां से उसे नैदानिक व व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हो सके यही ज्ञान आगे चलकर उसे एक सफल चिकित्सक के रूप में स्थापित करने में मदद करता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय सरक्षण मिलने

शेष पेज 5 पर

स्तरीय शिक्षण व्यवस्था को तैयार है इलेक्ट्रो होम्योपैथिक विद्यालय ....पेज 4 से आगे

के बाद भी समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ेगी क्योंकि जो पहले से प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां हैं उनके सामानतर खड़ा होने के लिए उनसे बेहतर प्रदर्शन करना होगा यदि बेहतर नहीं कर पाते हैं तो कम से कम उनके स्तर का प्रदर्शन तो करना ही होगा, ऐसा नहीं है कि अभी हमारे चिकित्सक अच्छा कार्य नहीं कर रहे हैं कार्य तो अभी भी बहुत और अच्छा हो रहा है परन्तु पूर्ण शासकीय संरक्षण के अभाव में हमारे चिकित्सक अपनी योग्यता का शत प्रतिशत नहीं दे पा रहे हैं परिणामतः अच्छे से अच्छे परिणामों का भी सही मूल्यांकन नहीं हो पाता।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय सरक्षण मिलने के बाद भी समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ेगी क्योंकि जो पहले से प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां हैं उनके सामानतर खड़ा होने के लिए उनसे बेहतर प्रदर्शन करना होगा यदि बेहतर नहीं कर पाते हैं तो कम से कम उनके स्तर का प्रर्दशन तो करना ही होगा।

ऐसा नहीं है कि अभी हमारे चिकित्सक अच्छा कार्य नहीं कर रहे हैं कार्य तो अभी भी बहुत और अच्छा हो रहा है परन्तु पूर्ण शासकीय संरक्षण के अभाव में हमारे चिकित्सक अपनी योग्यता का शत प्रतिशत नहीं दे पा रहे हैं परिणामतः अच्छे से अच्छे परिणामों का भी सही मूल्यांकन नहीं हो पाता।

इहमाई के स्थापना दिवस के अवसर पर महासचिव डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई मैटी को माल्यापर्ण करते

इहमाई के स्थापना दिवस के अवसर पर महासचिव डा0 प्रमोद सिंह मैटी को माल्यापर्ण करते

इहमाई के 39 वें स्थापना दिवस पर महात्मा मैटी को माल्यापर्ण करते महासचिव डा0 अतीक अहमद

इन्सेट में इहमाई के स्थापना दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय संयुक्त सचिव डा0 एम0 के0 मिश्रा